I

Online class.
Date- 18|2|2022
Day-
Time- 10:00 A.M

Lecture Series No:- 68.

Topic,

Dr. Surita Kumari
Depart. of philosophy.
B.A part. - I
paper - II (H.)
A. N. D. College Shahpur
Patory, Samastipur.

(1) Matter.

Ans:- बर्कले (द्वारा) ने अपने दर्शन में ज्ञान के समस्त विषयों को आत्मगत या मन पर निर्भर माना है इसलिए उनके दर्शन को आत्मगत प्रत्ययवादी दर्शन कहा जाता है, आत्मगत प्रत्ययवाद से तात्पर्य उस सिद्धांत से है जिसके अनुसार केवल मात्र मन और प्रत्यय के अस्तित्व को ही माना जाता है तथा इनके अतिरिक्त अन्य किसी वस्तु के स्वतंत्र अस्तित्व को नहीं

P.T.O.

(2)

माना जाता है। दूसरे शब्दों में समस्त प्रत्ययों को आत्मगत ही स्वीकार किया जाता है। बर्कले के सत्ता दृष्टिता है। (Esse Est percipi)

दृष्टि ही सृष्टि है। बर्कले ने अपने सत्ता दृष्टिता है के सिद्धांत में यह माना है कि जीवात्मा ही अपने इन्द्रिय संवेदन रूप विज्ञानों के द्वारा प्रतीति के समय जगत की सृष्टि करती है अतः जगत आत्मा की सृष्टि है। यही कारण है कि जब तक प्रतीति रहती है तभी तक जगत रहता है। इस विषय में यह

ध्यान रखना चाहिये कि यह सृष्टि मात्र हमारी दृष्टि पर ही नहीं वरन् प्रत्येक मनुष्यों की जो भूतकाल में हुए हैं उनकी दृष्टि पर तथा सबसे पूर्व ईश्वर की दृष्टि पर निर्भर है। (यह कहना उचित)

P.T.O.

अतः यह कहना उचित है कि दृष्टि ही सृष्टि है।

प्रत्यक्ष की दृष्टता है! बर्कले का यह स्पष्ट मत है कि सत्ता अनुभव मूलक है अर्थात केवल मात्र उसी की सत्ता मानी जा सकती है जिसका अनुभव किया जा रहा है या अनुभव करना सम्भव है। इस प्रकार अनुभव कर्ता और अनुभव के विषय इन्हीं की सत्ता है। इनमें अनुभव कर्ता आत्मा है और अनुभव के विषय आत्मगत है अतः उनकी भी इसलिये सत्ता है, क्योंकि उनमें दृष्टि है अर्थात इनका अनुभव किया जाता है।

END